

工 九 七

Handwritten text in two lines, likely representing musical notation or a liturgical formula.



118  
 119  
 120  
 121  
 122  
 123  
 124  
 125  
 126  
 127  
 128  
 129  
 130  
 131  
 132  
 133  
 134  
 135  
 136  
 137  
 138  
 139  
 140  
 141  
 142  
 143  
 144  
 145  
 146  
 147  
 148  
 149  
 150  
 151  
 152  
 153  
 154  
 155  
 156  
 157  
 158  
 159  
 160  
 161  
 162  
 163  
 164  
 165  
 166  
 167  
 168  
 169  
 170  
 171  
 172  
 173  
 174  
 175  
 176  
 177  
 178  
 179  
 180  
 181  
 182  
 183  
 184  
 185  
 186  
 187  
 188  
 189  
 190  
 191  
 192  
 193  
 194  
 195  
 196  
 197  
 198  
 199  
 200  
 201  
 202  
 203  
 204  
 205  
 206  
 207  
 208  
 209  
 210  
 211  
 212  
 213  
 214  
 215  
 216  
 217  
 218  
 219  
 220  
 221  
 222  
 223  
 224  
 225  
 226  
 227  
 228  
 229  
 230  
 231  
 232  
 233  
 234  
 235  
 236  
 237  
 238  
 239  
 240  
 241  
 242  
 243  
 244  
 245  
 246  
 247  
 248  
 249  
 250  
 251  
 252  
 253  
 254  
 255  
 256  
 257  
 258  
 259  
 260  
 261  
 262  
 263  
 264  
 265  
 266  
 267  
 268  
 269  
 270  
 271  
 272  
 273  
 274  
 275  
 276  
 277  
 278  
 279  
 280  
 281  
 282  
 283  
 284  
 285  
 286  
 287  
 288  
 289  
 290  
 291  
 292  
 293  
 294  
 295  
 296  
 297  
 298  
 299  
 300  
 301  
 302  
 303  
 304  
 305  
 306  
 307  
 308  
 309  
 310  
 311  
 312  
 313  
 314  
 315  
 316  
 317  
 318  
 319  
 320  
 321  
 322  
 323  
 324  
 325  
 326  
 327  
 328  
 329  
 330  
 331  
 332  
 333  
 334  
 335  
 336  
 337  
 338  
 339  
 340  
 341  
 342  
 343  
 344  
 345  
 346  
 347  
 348  
 349  
 350  
 351  
 352  
 353  
 354  
 355  
 356  
 357  
 358  
 359  
 360  
 361  
 362  
 363  
 364  
 365  
 366  
 367  
 368  
 369  
 370  
 371  
 372  
 373  
 374  
 375  
 376  
 377  
 378  
 379  
 380  
 381  
 382  
 383  
 384  
 385  
 386  
 387  
 388  
 389  
 390  
 391  
 392  
 393  
 394  
 395  
 396  
 397  
 398  
 399  
 400  
 401  
 402  
 403  
 404  
 405  
 406  
 407  
 408  
 409  
 410  
 411  
 412  
 413  
 414  
 415  
 416  
 417  
 418  
 419  
 420  
 421  
 422  
 423  
 424  
 425  
 426  
 427  
 428  
 429  
 430  
 431  
 432  
 433  
 434  
 435  
 436  
 437  
 438  
 439  
 440  
 441  
 442  
 443  
 444  
 445  
 446  
 447  
 448  
 449  
 450  
 451  
 452  
 453  
 454  
 455  
 456  
 457  
 458  
 459  
 460  
 461  
 462  
 463  
 464  
 465  
 466  
 467  
 468  
 469  
 470  
 471  
 472  
 473  
 474  
 475  
 476  
 477  
 478  
 479  
 480  
 481  
 482  
 483  
 484  
 485  
 486  
 487  
 488  
 489  
 490  
 491  
 492  
 493  
 494  
 495  
 496  
 497  
 498  
 499  
 500  
 501  
 502  
 503  
 504  
 505  
 506  
 507  
 508  
 509  
 510  
 511  
 512  
 513  
 514  
 515  
 516  
 517  
 518  
 519  
 520  
 521  
 522  
 523  
 524  
 525  
 526  
 527  
 528  
 529  
 530  
 531  
 532  
 533  
 534  
 535  
 536  
 537  
 538  
 539  
 540  
 541  
 542  
 543  
 544  
 545  
 546  
 547  
 548  
 549  
 550  
 551  
 552  
 553  
 554  
 555  
 556  
 557  
 558  
 559  
 560  
 561  
 562  
 563  
 564  
 565  
 566  
 567  
 568  
 569  
 570  
 571  
 572  
 573  
 574  
 575  
 576  
 577  
 578  
 579  
 580  
 581  
 582  
 583  
 584  
 585  
 586  
 587  
 588  
 589  
 590  
 591  
 592  
 593  
 594  
 595  
 596  
 597  
 598  
 599  
 600  
 601  
 602  
 603  
 604  
 605  
 606  
 607  
 608  
 609  
 610  
 611  
 612  
 613  
 614  
 615  
 616  
 617  
 618  
 619  
 620  
 621  
 622  
 623  
 624  
 625  
 626  
 627  
 628  
 629

卷之五



श्रीगणेशायनमः ॥ ॥ अभिलक्षितमलजलनिवहैः प्रमलकुलानि  
कसेवितकपोलैः ॥ अभिममलदातारकामेशगरापातिवन्दे ॥ १ ॥ द  
दासुन्दे मोदकौधारयत करनोतालये सवरागवारयलैः ॥ नेत्रप्र  
नेसजनाभारयतैः वन्दे विद्यानाथयतंगशोभ्यै ॥ २ ॥ ॥

विद्येश्वराय विरायः विश्वरूपाय नमः ॥ सर्वविघ्नहरदेवः  
सर्वसातिनमाम्यहं ॥ १ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

श्रीविद्येश्वराय नमः ॥ ॥ सकलपुणानिधानं <sup>भावनिपु</sup> ~~विघ्नहर~~  
निघातं गजवदनमचिन्तं विघ्नविघ्ने दहेतुप्रणाजनवन्देभ्यो  
सिद्धिदानाय नमः ॥ १ ॥ श्रीनृत्यस्वराय नमः ॥ अभि



ग॥ श्रीगणेशायनमः॥ ॥ अभिरतमजलनिवहं भ्रमलकुलानेक  
 सेवितकपुलं॥ अभीमजफलदातारकामेसगणपतिवन्दे॥ १॥  
 ५ ददासुदैमोदकाधायतः कर्माणायेसर्वगावारयतः॥ न्यत्र प्रा  
 ते सजनातारयतं वन्दे विद्यानासयतं गणेशं॥ २॥ श्रीविघ्नेश्व  
 रायनमः॥ ॥ सकलगुणानिधानपार्वतिप्रियातुः गजवद  
 नमचित्तविघ्नविदेदहेतुं॥ प्रणतजुजवन्देभ्योसिद्धिदानं च म  
 मगणपतिमभिवन्दे बुक्कलुगवतार॥ १॥ श्रीनृत्यस्वरायन  
 मः॥ ॥ अभिनवरसलीलापार्वतीकैलिलौलं सकलगुणानि

धानभक्तुरक्षाविधानं॥ विडुरवलीभारं वक्तुकल्याणजालं  
 वहरोतिममलनोमिनृत्यस्वदंतं॥ १॥ याकुंदेदुगुसारहारध  
 रालायाभुभुवस्त्राभुतायाविनावरदन्दमुद्दतकरायास्व  
 १॥ तपआसयावृद्धाचूतसंकरमभितीभीदेवसदावदितासा  
 २॥ मां प्राप्नुसैरध्वगित्तेभगवतितिश्रयेसजायापहं॥ १॥  
 मुक्तावलीविचारसारपरमामाजगत्यापिः विनापुस्तका  
 लंकधारिणिमभयतां जायावरहापहं॥ हस्तफाति  
 कमाशिकाविधधतिपञ्चासनिसेस्थोमोवदेतोपरमेस्व



रिभगवतिवृषीप्रदाशाधम ॥ १॥ यवुलावृहयदुमरुतस्व  
 तिदेवसवेवदेसाधुपदकमोपनि सदैर्गीयुलिसामगा ॥ ७॥  
 वस्थीनिमनपापस्येतियागियावोयस्यातेनविपुरासुरगणा  
 देवायतस्मै नमः ॥ १॥ कसुरितिलकंललातपतलवक्षसिलेको  
 कस्तुभः नासागुगजमुक्तीकैकरतलवनुकरेकन्दने ॥ सर्वगोह  
 रिचन्दनचतुलसीकठचसुरवतावलीगापस्त्रीपरिवेष्टीतोविज  
 यतेगापातचूडामणि ॥ १॥ मेरुकांचनदत्तानांगमाकोटिस  
 डि ॥ तिरति ॥ पञ्चकोटिपुरंगानाततफलशिखदरसनम् ॥ १॥

स श्रीमच्चन्दनचर्चितोज्वलवपुःशुक्रावरामल्लीकामातातं  
 कृतकुराउलाप्रवितसंमुष्मावलीसोभीता ॥ सर्वज्ञाननि  
 दानपुरसकराकृद्राक्षमोलाधराःवाग्देवीवदनां वृक्षेवस  
 तुमेःत्रैलोक्यमाताचिरं ॥ १॥ मूकं करोतिवाचालः प  
 ज्वलं घेयतगिरिं ॥ यत्कृपातमहंवन्दे परमाचनंद  
 माधवं ॥ १॥ करपुरगौरकरुणावताः संसारसारं  
 भुजसेदहारं ॥ सदावसतंददयाधरविंदः नमोवभं  
 वारिगश्रयतं नमो ॥ १॥ सांताकारं भुजकसयनपद्म



नाभंसुरेसंविस्वाधारंगगनसदसंमेघवरं सुभांगुलदम्भी  
कोलंकमलनयनयोगविद्यानन्दकन्देविष्णुभवभय  
हरणैवलोकोकनाथं ॥१॥ आओरामतपुवनंदगवरां  
हत्यामृगाकाचनः वैश्रोहिहरणं जलायुमरणांसुग्रीव  
सेवासनं ॥ काहीनिप्रसूनसमुद्रतरांलंकापुरिअह  
नं ॥२॥ प्रसंजरावराकुम्भकरां प्रतापरासायरां  
॥३॥ योविष्णुप्रवदन्निवैद्यवगणां सेवाशिवसक्तिकाभ

क्तिभस्करभाक्तिकादिनमरिगवृक्षस्वरूपदिनाभा ॥४॥ म  
द्धिद्रोमरायोवदसतंलोकेस्वरवौधका ॥ अन्यत्रक  
रणांमयप्रतिदिनेनौमित्रीलोकेस्वरं ॥५॥ सरस्वति  
माहाभागेविनापुस्तकधारिशोहंसुबाहंसनुगतंदेहीविद्यां  
सरध्वनीः सरस्वतिनमस्तुभ्यं वदेत्कामरूपनिविष्टारूपकं  
रिष्यामिसिद्धिभवतुमेस्वरवागर्थप्रकसंप्रकतोवागर्थ  
प्रितपीतयेजगतपितरोवन्देपावतिपरमेश्वरिसातेभवतुसूपृ



ॐ स्वस्ति नमः ॥ ॥ नमोस्तुते माहादेवी सत्यारण्योपहृ  
रीणाः नैकोद्य जननिस्तुभ्यं श्री श्री श्री स्वस्ति नमः ॥ ॥ सिंहासन

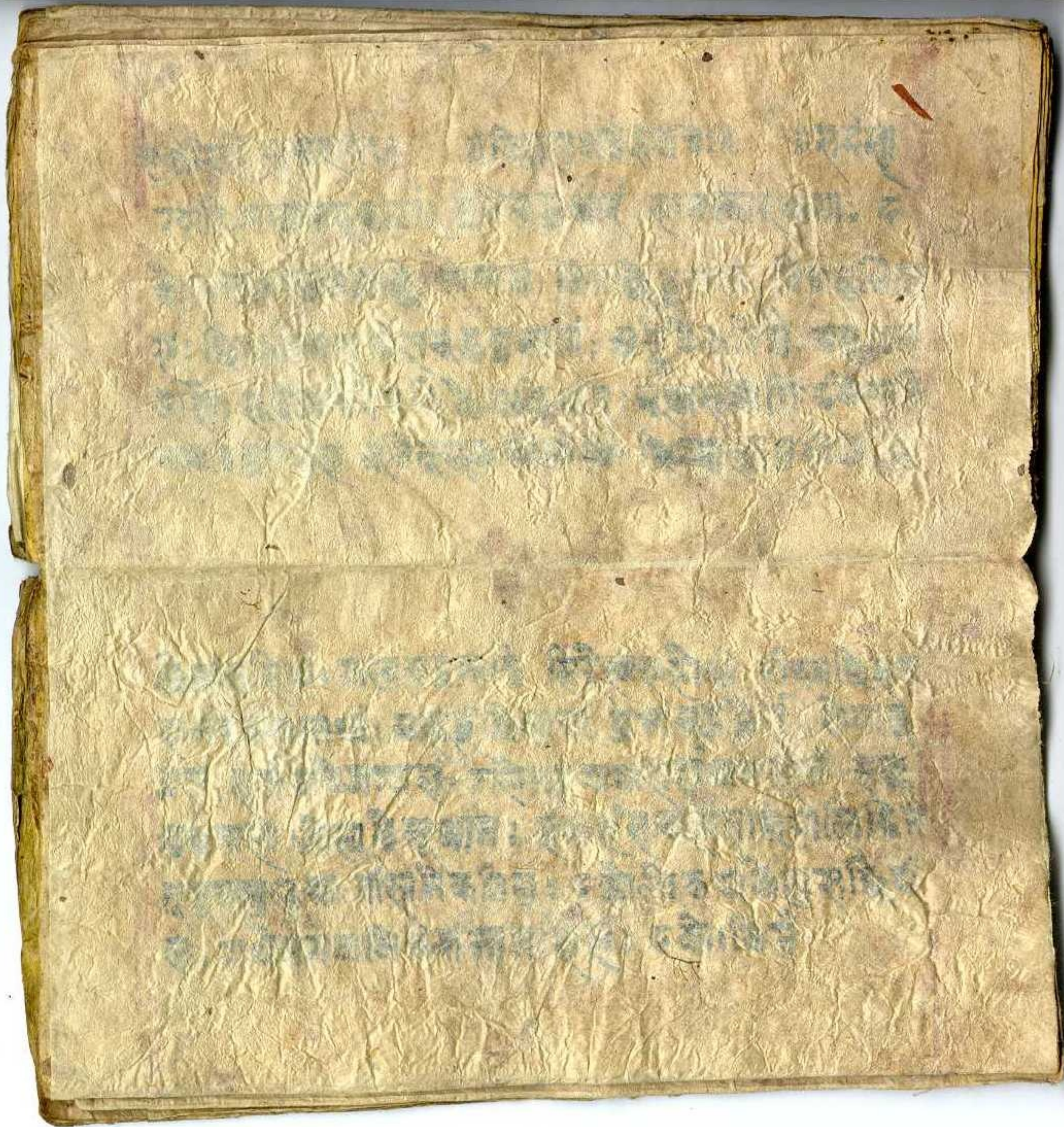
समः। रुद्राख्ये फलकधारी गीः उत्पन्नमयहस्तं च वन्दता शुभने  
स्वरि॥१॥ चतुर्भुजा महादेवी जगत्त्रयददु मंदिता । दक्षिणे नैव रपा  
नो नदिना सिद्धि मे श्वरी॥ सर्वान्कार भूषांगि सर्वलिङ्गा स्त  
म युक्ताः सर्वसिद्धिप्रदा देवी नदिना सर्वमंगला॥ २॥ रुद्र प्रे  
न मनित्य रुद्रो गा स्थिति हेतवे प्रल सा स्थिति मुत्प र्चो वंदिता  
मवी केश्वरि॥ जगत्त्रयो पद्मरी च लक्ष्मी स प्रदा यरोः य पठेत्  
मानन्दा येन पुत्रपौ वदित जले॥ ३॥ इति लक्षा निजगदि चरत्वा  
त्रैलोक्यपुराणम्॥



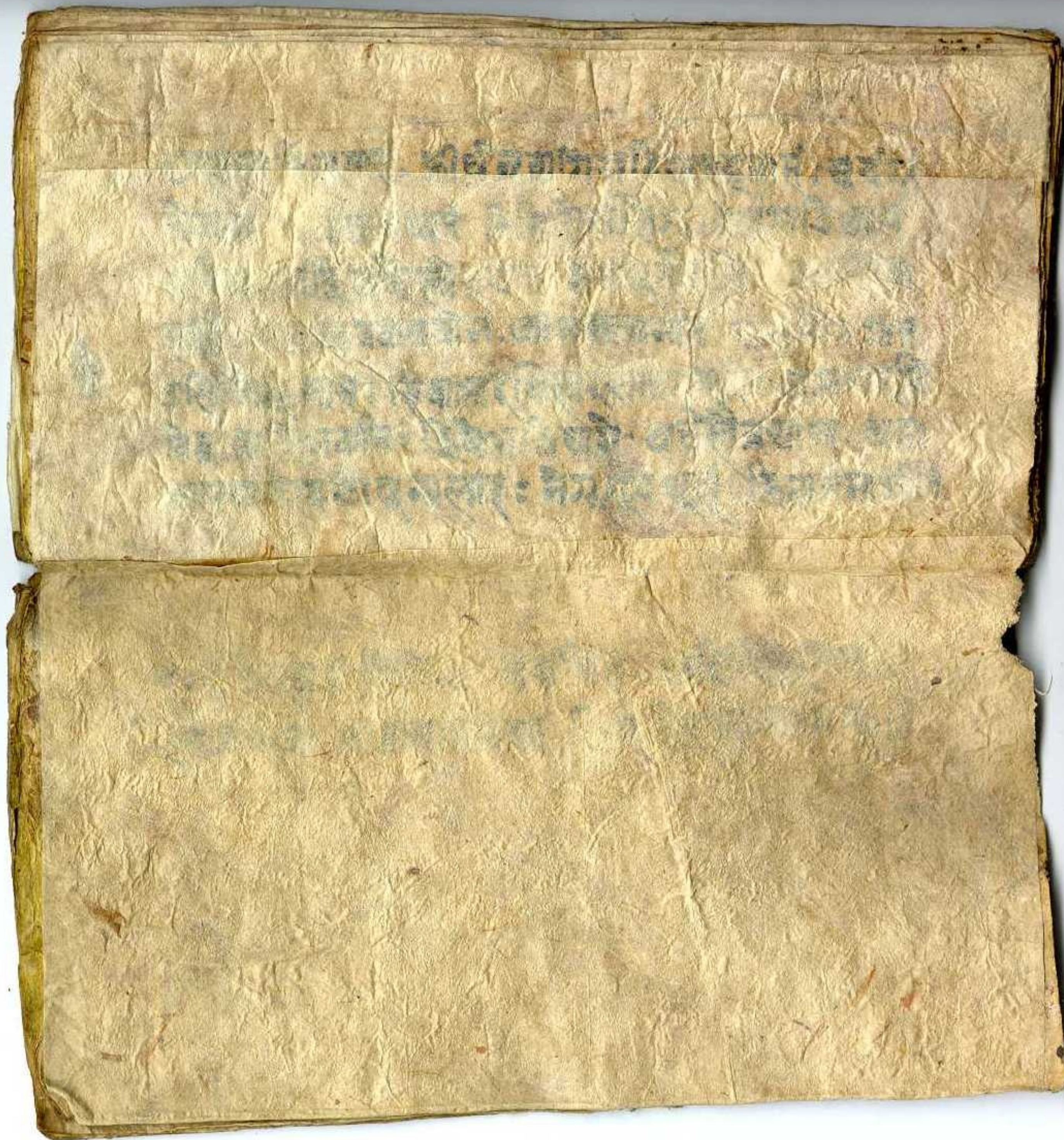
This image shows a close-up of a piece of aged, textured paper. The paper has a mottled appearance with shades of green, yellow, and brown. There are several creases and wrinkles across the surface, suggesting it has been handled or folded. A small, dark brown stain is visible near the top center. The overall texture is rough and uneven, characteristic of old, handmade paper.

The image shows a single, rectangular piece of aged paper with a mottled, yellowish-brown color. The surface is heavily textured with numerous small, dark brown spots (foxing) and larger, irregular water stains, particularly along the right edge and bottom. Faint, ghostly outlines of text are visible through the paper, indicating bleed-through from the reverse side. The text is written in a dark ink, likely in a South Asian script, but is completely illegible due to fading and the condition of the paper. The edges of the paper are slightly irregular and worn.











ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥  
 श्रीमद्भगवद्गीता ॥ अर्जुनसंवादे ॥  
 अर्जुन उवाच ॥ द्रुपदमुनिर्मातुल्यः  
 कुरुक्षेत्रे भक्ष्यं देवाय च यतः ॥  
 दत्तवान्मम त्वं तस्यैव तदाग्रतः  
 द्रुपदो वीर्यवान्द्रुपदो वीर्यवान् ॥

॥ मिष्ट  
 निगवरि  
 र्वितं श्री  
 रावगंद  
 वंद रछ  
 वनभूम  
 योरि



ASMA ARCHIVES

|              |      |
|--------------|------|
| I            | 2174 |
| BIBLIOTHEQUE |      |

॥

॥ श्री गणेशाय नमः ॥ श्री गणेशाय नमः ॥

॥ श्री गणेशाय नमः ॥



कं महादेवसूदेवसूर्यतिसर्ववीश्वविश्वभरं. श्रीनीः ६ ॥ रु  
 द्ररूपशूररूपसूर्यतिमक्षमाजहलाहलं. गगनविधितल अ  
 मतांभव आदिमृतसमाहितं. कामकुंजरसूनि केदारिमहं काल  
 विश्वेश्वरं. श्रीनीः ७ ॥ क्रतुवसतमचक्रचौदिशि प्राप्यते फलदा  
 यकं. सर्वकासी मयवासिप्रातमंगल गायकं. ब्रह्मकेटुदिवैजना  
 थं श्रील. शिषिरमहेश्वरं. श्रीनीलकंथं हिमालयजलधलवि  
 श्वनाथं विश्वेश्वरं : ८ ॥ इती श्री पाराश्वरसूनि विरचितं नि

स्वनाथरयकंसंयुयीः ८ ॥ ॐ ॥ ॐ ॥ ॐ ॥

ॐ नमः श्रीनडाग्रह उवाच. १ ॥ ॐ कुसुमसंकासं. काष्ठयेयं  
 मालाशक्तिं. तमोरीसर्वपापघ्नं. पुनसासिदिवाकरं : १ ॥ दधि  
 तवत्स्वत्वा लक्ष्मीरोदान्धुवसहव. तनमासिसत्री नंदेवः समो  
 मोकुटदण्डनः : २ ॥ धनिन्यागर्हसंहतं. विद्युत्केजसमयुधं : ३ ॥  
 कुमारंसकीहलेचः : ४ ॥ असारं पुनमास्यहं : ५ ॥ प्रियंगुवलिस्त्या



मंरुपेनाप्रतिमं. वृद्धमोषासर्वगृन्नातं नमामिसन्नातं सुतं १॥ ४॥  
देवानां च. ऋषिनां च. गुरुकांचनसन्नीतः. उल्लसन्निभैलो  
केणं. पुनसानिरुहस्यतिः ॥ ५॥ हिमकूटदृग्गालातः देवा  
जांयमंयह ॥ सर्वसातुप्रवकारः भार्गवप्रणामाच्यहं ॥ ६॥  
निराजजससप्रक्षं. रविप्रतीमहाग्रहः. ह्ययायागर्हसंस्तु  
तः वन्देभक्त्यातनीस्व ॥ ७॥ अर्द्धकायमहाविद्यः. चन्द्रादिह्य

प्रसदक ४॥ सैरुकोदरसंजाता. राहुतं पुणामाच्यहं ॥ ८॥ यला  
लेषुसंकासतायविमर्दकः ॥ रोडरौद्रालोकयोर. त्यकेतु  
पुणामाच्यहं ॥ ९॥ सुगुंभीरुसंकासः. सर्वदेवतामस्तुतं ॥  
सदीर्घजन्मकारेण. जन्मदेवतास्तुते ॥ १०॥ आत्यनोकदंती  
तु. प्राप्तहन्ताय न पथे नः दिवावायदिसो. सिद्धिस्तुतं  
संयः ॥ ११॥ ओत्सर्गमनुलं चैव. लोभ्येष्टिर्विध्वनं. नरना



दिन्यां नां च. प्रियं नु. तपनासनः ॥ १२ ॥ दस्युको को ग्नियसो  
वायिष्यचात्रे रोगविदिताः ते सर्वप्रसन्नः. यान्ति या सो कुर्यान्  
सर्वं यः ॥ १३ ॥ इति श्री स्कन्द पुराणे नवग्रहस्तोत्रं तैत्तिरीयसं  
यतः ॥ ॥ ॥ गदिह धर्मसूचना मन्त्रदोषो निरुद्धः ॥

श्री गणेशाय नमः ॥ श्री भिमसेनाय नमः ॥ ॥ भिमसे  
ना महाकाय. सर्वकायफलं पुदः ॥ शुद्धिं दीयान् जं कीर्तिः ॥  
किं पुत्रो कर्म धरा ॥ १ ॥ किंच कारि महासुरो भिमसेना हि  
तेजः ॥ दोषदिपुत्रा मर्त्यैः ॥ इत्येव धर्मा निवारकः ॥ २ ॥ दसा  
सराप्राण हर्त्रा च. सारुणासमरेश्वरैः ॥ सौगन्धिकैः काकैः काभि



जलासंधपुतासकः॥३॥ काचुनाष्टनतोधिमा॥४॥ वारजो  
दोपदिष्टिपः॥ पातालं पुतागानिचः॥ दूर्जगप्रानद्यातकः॥५॥  
महद्यष्टस्यरीहारिः॥ गधुर्वगनमर्दनः॥ बसुदेवप्रियाभोगि  
वातदेवसदाप्रियः॥६॥ कुरुवंसः॥ कर्त्तुः॥ मरुगुतगडे  
समः॥ हसंरुचुजाधर्माधार्मिको धार्मिकप्रियः॥७॥ य  
कादसिनिधेकः॥ सरदः॥ प्रियः॥ मरुगुतगडे॥ सौमवं

मप्रतिदीप्तः॥८॥ यासप्रियोमासंभोगिः॥ भारतेभारनायक  
जलासंधजलोद्योद्वा॥ गदाद्वंद्विसारदः॥९॥ पाचुनाष्टिप्रा  
नभर्त्तुचः॥ पावलाष्टवजातजः॥ पाशवारविहारिचः॥ पंचजन  
रक्षकः॥ निषङ्गकिषयीसायिहिदिः॥ सेतोविकोदरः॥ यद्वयु  
वाल्मीकीका॥ वितद्वदामनसुधीः॥१०॥ पंचभयंगः॥ प्रिया  
धारसातलोक्षननः॥ जद्वयसुभूतः॥ पादपुत्रसरस  
धीः॥११॥ मनुसुत्रोद्यो नसियो जयद्रथविरक्षकः॥ देवुको



वेदव्यासोः हस्तनायरक्षकः १२ ॥ धिरात्मा वै र्ग्यधारी चः ध  
रादो धरणीयतिः गांधारिपुत्रद्वीचः कौकेयनरुनायकः १३ ॥  
वृहदोकागदायाणी. धृतराष्ट्रसत्ताहितः ॥ वलभद्रप्रिया  
सीधो. सात्यकितरुगजः ॥ १४ ॥ काशोगनासदाप्रिति. क  
नारहृदयस्थितः गंगासीतद्विषाश्रीचः गर्गाजलसमावृतः ॥  
१५ ॥ चंतासीगयनासिच. धृष्टद्युम्नसुरोमधुः ॥ चतुर्भु  
ख. स्वतरेद्वयस्वार्चिचतुकोवरः ॥ १६ ॥ जनदत्तानन्दो जरे सो

धर्मरक्षाकः ॥ सनसकुरुकासना नन्द मदसिधः ॥ १७ ॥ १८  
ज्ञाने सोऽज्ञानदातृ च. ज्ञानगं मधुरातताः स्वर्गुगोपधरादेह  
पिताम्बरसुयानरः ॥ १९ ॥ अस्वमेधमखं कर्मा. सर्वत्रोमवि  
सारदः ॥ अश्वमेधरततेतिः दिशं नाम्रासेततद्वल्लभः ॥ १९ ॥  
प्रातस्त्रात्यासुचीर्भूत्यासुसथा देवततपः ॥ श्रीकालचानिस  
पाथसर्वसीडीलभेतुमान ॥ २० ॥ भूर्यत्वाचित्ततद्वुक्तलिरयी  
साधारणेद्युदिः सत्रजानमवधसिधी. नानकीविचारना ॥ २१ ॥



सुखस्यांकरुण्योरोरावस्यानुकजेसजो ॥ तत्संयोगे भवेत्ये  
धि. सकाशाच्चविसेषतः ॥ २२ ॥ यजयतः यमकुरुमे ॥ कंजगो  
लेल्लानके. वारुसम्यादितिसूखेसुप्रतिष्ठससस्यः ॥ २३ ॥ कर्ण  
र. कुरुमंचेवगोत्रोचनागरुततः ॥ चतुनो कचुतचैव. श्रीताक्षते  
सुताक्षिच ॥ २४ ॥ कुरुमेलस्वयमूचातधाकेतनिशोजयत ॥ यते  
समेकतायुजोयुजका नांस्तमोक्षेय ॥ २५ ॥ सुधवाकनविः शुभाग  
चमेयातले ॥ सायाभूत्यासककेतिलाशो नोपतिष्ठित ॥ २६ ॥ नाया

लोत्रसतदिष्टां. ययथेत्यातगासुचि ॥ तस्यालक्ष्मी भवेन्नीत्यंस्तु  
यदुजथासतिः ॥ २७ ॥ विसेषतवल्लिजगे. वायुयुगो भवेद्रवः ॥ क  
कागमिशांस्तजेजेजदूतीरेतयोवतो ॥ २८ ॥ गसूक्यादुक्तरेदेजे. नी  
लकथांचधिर्यतः ॥ संरययुषिभागेच. शावचचावधिर्यतः ॥ २९ ॥  
तिथ्यचूतसमोलिगे. मेधिलभेरस्यसरी ॥ लिङ्गचुचोरु. रेदेस्यरो















